संयुक्त पाठ्यक्रम
(महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय और कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय के लिए)
बी०ए० षष्ठ सेमेस्टर
जनवरी २०१४
हिन्दी (अनिवार्य)

समय : ३ घण्टे

कुल अंक : १००
लिखित परीक्षा : ८० अंक
आंतरिक मूल्यांकन : २० अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

- नव्यतर विधाओं पर आधारित पाठ्यपुस्तक, (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र सम्पादित)
- हरियाणवी लोक साहित्य का इतिहास
- हिंदी पत्रकारिता
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न

खण्ड क : प्रस्तावित निर्धारित पाठ्यपुस्तक

षष्ठ सेमेस्टर हिंदी (अनिवार्य) की नव्यतर गद्य विधाओं पर आधारित पाठ्यपुस्तक (जिसका नामकरण पुस्तक–निर्माण के साथ किया जाएगा) कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रका हिंदी–विभाग तैयार करेगा। कुरुक्षेत्रविश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्रके हिंदी–विभाग का दायित्व होगा कि पाठ्यक्रम प्रभावी होने से पहले वह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों को उपलब्ध कराए ।

प्रस्तुत प्रस्तावित पाठ्य पुस्तक में निम्नलिखित लेखकों की रचनाओं को शामिल किया जाएगा–

१ (निबन्ध) : बालमुकुन्द गुप्त
२ (निबन्ध) : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
३ (संस्मरण) : महादेवी वर्मा
४ (ललित निबन्ध) : आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
५ (ललित निबन्ध) : विद्यानिवास मिश्र
६ (व्यंग्य) : हरिशंकर परसाई
७ (यात्रावृत्तान्त) : राहुल सांकत्यायनश्श्श्श्श्

निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

पाठ्यक्रम में निर्धारित लेखकों के साहित्यिक परिचय, निबन्धों के वस्तु पक्ष तथा कला पक्ष पर ही प्रश्न पूछे जाएंगे । श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्श्

खण्ड--ख : हरियाणवी भाषा और साहित्य का इतिहास

पाठ्यक्रम में निर्धारित आलोचनात्मक प्रश्न

१ हरियाणवी भाषा का उद्‌भव और विकास
२ हरियाणवी भाषा की प्रमुख बोलियाँ
३ हरियाणा की सांग परम्परा : उद्‌भव और विकास
४ हरियाणवी भाषा का आधुनिक साहित्य
  (क) हरियाणवी कविता : परिचय और प्रवत्तियाँ
  (ख) हरियाणवी का गद्य साहित्य
    १ उपन्यास साहित्य
    २ कहानी साहित्य

प्र०सं०		पृष्ठ संख्या
1	आशा का अंत निवन्ध [redacted] सार	1 से 4
२	गिल्लु संस्मरण का सार	5 से ८
3	मेरे राम का मुकुट भीग रहा है का सार	९ से-12
4	'सदाचार का तावीज' व्यंग्य रचना का सार	13 से 16
5	हरियाणवी में उपन्यास साहित्य का परिचय	17 से २०
6	हरियाणवी कहानी साहित्य की विकास यात्रा का परिचय	२१ से २२
7	हरियाणवी नाटक साहित्य की विकास यात्रा का परिचय	२३ से २४
7	पत्रकारिता के महत्व का विवेचन-	२५ से २८
8	पत्रकारिता के विभिन्न प्रकारों पर प्रकाश डालिए-	२९ से ३२
९	शीर्षक के विभिन्न प्रकारों पर प्रकाश	३३ से ३8
10	सम्पादकीय लेखन को उदाहरण सहित व्याख्या	३९ से ४२
11	भारत में प्रेस की वर्तमान स्थिति-	४३ से ४6
12	भारत में प्रेस के भविष्य पर प्रकाश-	४७ से ५०
13	सम्पादक के कौन-कौन से गुण होते हैं	51 से 54
14	फीचर क्या है और उसके उद्देश्य	55 से 56
15	स्वतन्त्र प्रेस या प्रेस की स्वतन्त्रता पर प्रकाश	57 से 58
16	हिन्दी निवन्ध के विकास में बालमुकुन्द गुप्त का योगदान	59 से 60
17	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निवन्ध कला पर प्रकाश	61 से 63
18	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निवन्ध कला की विशेषताएँ	64 से 66
19	हिन्दी निवन्ध साहित्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान	67 से 68
२०	निवन्ध के विकास में विद्यानिवास मिश्र का योगदान	69 से 70
२१	हरियाणवी भाषा का उद्भव और विकास	71 से 72
२२	हिन्दी विकास में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का स्थान	73 से 79

Page No. 1
Date / /

आशा का अंत निबंध का सार लिखिए

आशा का अंत बालमुकुन्द गुप्त द्वारा एक राजनीतिक व्याख्यात्मक निबन्ध है। इसमे भारत मे विदेशी साम्राज्यवादी अंग्रेजो द्वारा स्थापित कुशासन से भारत दुर्दशा का सजीव चित्रण है। लेखक लार्ड कर्जन को संबोधित करते हुए कहता है कि उसके पुनः भारत आगमन पर उसने अपना जो प्रथम भाषण दिया उसने भारतीय जनता की आशाओ का अंत कर दिया है लेखक स्पष्ट करता है कि आशा एक ऐसा भाव है जिसके सहारे पीडीत व्यक्ति अपना संम्पुर्ण जिवन काट लेता है परन्तु यदि किसी आशा का ही अंत हो जाए तो उसका जीवन दुभर हो जाता है स्वयं कर्जन साहब ने प्रजा के बीच ~~आकार~~ आकर उसका दुखः तखलीफ कम करने का प्रयास करेगे वे लार्ड कर्जन को दुसरा विक्रमदालिक तथा अकबर महान के रुप मे देखना चहते थे कहते है कि जो लोग भारत की जलवायु तथा नमक खाता है वह भारतीय गुण गाता है पर लेकिन कार्जन पर कुछ भी असर नही हुआ था।

उन्होंने अपने दूसरे कार्यकाल में भारत आते ही कलकत्ता म्युनिसिपल कारपोरेशन की स्वाधीनता समाप्त कर दी है उन्होंने आकाल पीडितों की ओर ध्यान न देकर दिल्ली दरबार की ओर किया है उन्होंने घोषणा में कुछ पदों के लिए केवल अंग्रेज ही नियुक्त किए थे। उन्होंने पीडित भारतीयों को ठोकर लगाकर अपनी जिद को सत्यवादिता का सबूत दिया है जबकी वह सत्य नहीं है चुंकि कर्जन ने अपने शासक होने के विचार को भुलकर भारत के लोगों के हृदय में चोट पहुंचाई है अतः लेखक उसके दो बातें पुछने को अपनी गुस्ताखी नहीं मानता वह उससे कहता है कि पराधीन भारतीयों की सत्यप्रियता विजेता अंग्रेजों की सत्यप्रियता का मुकाबला वैसे ही नहीं कर सकती जैसे जब इंग्लैंड दूसरे देशों के अधीन था तब वहाँ के निवासियों की नैतिक दशा उन पर अधिकार करने वाले देशों के लोगों की नैतिक दशा का मुकाबला नहीं कर सकती है यदि आज इंग्लैंड दस साल गुलाम हो जाए तो पता चले कि वहा के लोग कैसे सत्यवादी और कैसे नीतिपरायण है वैसे लार्ड कर्जन के लिए भारत योग्य भूमि है।

परन्तु इस देश के लाखों आदमी आवारा कुत्तों की भाँति भटकते कर मर रहे है हालांकि इस देश के लोग अपनी दशा के लिए अपने भाग्य को ही दोष देते है शासक को कुछ नही कहते परन्तु अफसोस कि लार्ड कर्जन जैसे शासक भारतीय को धुर्त कहते है लेखक लार्ड कर्जन से कहता है कि उसके कभी भी गरीबी भुखमरी से पीड़ीत प्रजा की दशा का आकलन नही किया है यहा तक कि उसने कभी भारतीयो को उत्साहजनक बात भी नहीं कही है उलटे गालिया ही दी है इस देश के लोग इगलैण्ड की महारानी विक्टोरिया के व्यवहार से कभी-२ अपनी पराधीनता का दुख भुला बैठते है परन्तु आप उन्ही महारानी के पुत्र एडवर्ड के प्रतिनिधि होकर इस देश की प्रजा मे अत्यन्त अप्रिय बने हुए है। यह इस देश की दुर्भाग्य की बात है कि देश की प्रजा आपको नही चाहती है और आप इस देश को नही चाहते है फिर भी आप इस देश के दुसरी बार शासक बनकर आए है

आशा का अंत निबन्ध

निबन्धकार

बालमुकुन्द गुप्त

गिल्लू का संस्मरण का सार लिखिए।

गिल्लू महादेवी वर्मा विरचित एक कारुणिक संस्मरण है। इस संस्मरण मे उन्होंने अपने जीव-जगत-परिवार के एक सदस्य गिल्लू गिलहरी के अपने परिवार मे आगमन तथा उसकी समाधि की संस्मरणात्मक कथा कही है संस्मरण का सार इस प्रकार है —

लेखिका को अपने बगीचे मे लगी सोनजुही मे नई पीली कली खिलने पर अनायास ही गिल्लू गिलहरी की याद आ जाती है एक दिन सुबह लेखिका ने देखा कि उसके घर के बरामदे मे रखे गमलों पर दो कौवे चोंच मार रहे है। गमलों के बीच एक नन्ही गिलहरी फंसी हुई है। जिसे उन कौवों की चोंच से घायल इस गिलहरी का [illegible] चलना मुश्किल है फिर भी लेखिका ने अपने प्राणी प्रेम के चलते उसे बचाने का उपक्रम किया उसके घाव को साफ किया और मरहम लगाया लेखिका की मेहनत रंग लाई कि तीन दिन बाद उसने लेखिका की उंगली अपने पंजो से पकड़ली। तीन चार मास बाद उसके शरीर

के स्निग्ध रोंए, झब्बेदार पूंछ और चंचल चमकीली आंखे सबको आश्चर्य मे डालने लगी। लेखिका ने उसका नाम गिल्लू रख दिया। पालने रखने की एक डलिया को खिड़की पर लटकाकर उसका घर बना दिया गया उस घर मे वह दो वर्ष तक रहा लेखिका जब लेखने को बैठती तो वह उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसके पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाया करता था भूख लगने पर वह चिक-२ की करके अपनी भूख की सूचना देता था कुछ समय के पश्चात ही उसके जीवन का प्रथम बसंत आया था बाहर की गिलहरियां लेखिका की खिड़की की जाली के पास आकर जब चिक-२ करने लगी तो लेखिका ने उसे कुछ समय के लिए मुक्त करना आवश्यक समझा उसने जाली की कील निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया वह इस रास्ते से बाहर जा सकता था वह कभी बाहर कभी खिड़की के अंदर झूलता था तो कभी पार्क के फूल पत्तियों मे तो कभी सोनजुही की पत्ती मे छुपकर लेखिका को चौंका देता था वह लेखिका की खाने की थाली मे बैठ जाया

बड़ी मुश्किल से लेखिका ने उसको थाली के पास बैठना सिखाया था वह लेखिका की थाली में से एक-2 चावल बड़ी सावधानि से खाया करता था उसको काजु बहुत प्रिय थे। एक बार जब लेखिका का मोटर दुर्घटना में आहत होने के कारण अस्पताल में रहना पड़ा तब पीछे से इतना उद्विग्न हुआ कि उसने अपने प्रिय काजु भी बहुत कम खाए गर्मियों में वह बाहर भी नहीं जाता था अपितु लेखिका के पास रखी हुई सुराई में लिपटा रहता था क्योंकि गिलहरी की अवधि दो वर्ष की होती है इसलिए गिल्लू की अन्तिम अवधि का समय भी निकट था एक दिन गिल्लू ने कुछ भी नहीं खाया और रात को लेखिका के हाथ पर आकर बैठा तो लेखिका ने पैरों को ठंडा देखकर हिटर चालू किया लेकिन वह अगले ही दिन पहली किरण के साथ जग जीवन को जगाने के लिए सो गया था लेखिका ने उसे सोनजुही की लता के नीचे, गिल्लू की समाधि दी।

महादेवी वर्मा का

गिल्लू (गिलहरी का बच्चा)

संस्मरण

→ 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबन्ध सार लिखिए।

मेरे राम का मुकुट भीग रहा है प्रसिद्ध ललित निबंधकार श्री विद्यानिवास मिश्र का एक महत्वपूर्ण ललित निबन्ध है। इस निबंध के माध्यम से उन्होंने अपनी संवेदनो द्वारा लोक की अंतर्वेदना का सजीव चित्रण किया है निबंध का सार इस प्रकार है—

पिछले कुछ महीनो से लेखक का मन बेहद उदास रहता है। हालांकि उदासी की कुछ खास वजह नही थी। परन्तु दैनिक जीवन की बाधाओं, संघर्ष व तनावो के कारण चिंतित रहता है। लेखक अपनी वर्तमान उदासी का जिक्र करते हुए कहता है कि आज उसका पुत्र तथा महानगर से आई मेहमान कन्या उसके किसी मित्र के साथ संगीत का कोई कार्यक्रम देखने गए थे परन्तु देर रात तक भी जब नही लौटे तो उसकी उद्विग्नता बढ़ गई इस बीच रात मे बारिश हुई तथा होकर रुक भी गई। परन्तु देर रात तक नही लौटे तो वह चिंतित हो गया। उसे दूर से अवध मे गाया जाने वाला एक लोकगीत 'मेरे राम का भीजे मुकुटवा' सुनाई देता है तो उसे बचपन की याद आ जाती है।

जब वह वापस लौटता था तो वे उसे विह्वल होकर कहा करती थी मैं लाल को कैसा बनवास मिला था आज यह गीत सुनकर लेखक की आकुलता अचानक बढ़ गई तथा सोचने लगी कि आने वाली पिढ़ी की ममता की पीड़ा नहीं समझ पाती और पिछली पीढ़ी अपनी संतान के सभांवित संकट की कल्पना मात्र से उद्विग्न हो जाती है। उसे स्वंय पर क्रोध आने लगा कि उसने उन्हें वहाँ जाने क्यों दिया।

चिंता मे ही उसका मन राम की माता कौसल्या और देश की लाखो, करोडो माताओ की और घूम गया जिनके सबके राम वन मे निर्वासित है किन्तु ध्यान देने वाली बात यह है कि आज भी राम के सिर का मुकुट बाँधा जाता है और सभी को उसके भीगने की चिन्ता रहती है आज भी काशी मे रामलीला के आरंभ होने से पूर्व मुहूर्त मे मुकुट की ही पूजा सबसे पहले की जाती है उसका मुकुट लोगो यहाँ तक की कौसल्या के मन मे ही भी बसा रहा। सब सोचते रहे राम भीगे तो भीगे परन्तु मुकुट न भीगने पाए लोग सोचते रहे कि लक्ष्मण का कमरबन्द दुपट्टा भी न भीगने पाए और अखंड सौभाग्यवती सीता

सीता की मांग का सिंदूर भी भीगने न पाये
लेखक कहता है कि उस युग से लेकर
आज तक मुकुट, दुपट्टा और सिंदुर भीगने
की आशंका अभी भी साल रही है
इस देश ही नही पूरे विश्व की एक
कौसल्या है, जो हर बारिश मे बिसूर रही
है कि पता नही उसका राम कब लौटगा
वह सोचता है कि राम के मुकुट के
गौरव लक्ष्मण के सागर संकल्प तथा
जगजननी सीता के सौभागयता सीमंत सिंदूर
से रक्षित हो सकेगा राम तो लौटकर
राजा होते है। राजा राम और सीता रानी
द्वारा वन मे निर्वासित कर दी जाती है।
जंगल मे सीता सोचती है प्रसव की पीडा
हो रही है कौन इस बेला मे सहारा देगा
कौन प्रसव के समय प्रकाश दिखलायेगा, कौन
उसे समभालेगा, कौन जन्म के गीत गायेगा
सीता जगंल की सखी पत्ती लकड़ी बीनती
है जलाकर अंजोर करती है और जुड़वा बच्चों
का मुंह निहारती है राम का मुकुट इतना
भारी हो उठता है कि राम उस बोझ
से कराह उठाते है और वेदना के चीत्कार
मे सीता के माथे का सिंदूर और और
दमक उठता है।

इस प्रकार चिंतन करते-2
चार बज जाते है बाहर के दरवाजे पर
दस्तक होती है उसका लड़का तो नीचे

से ऊपर नहीं आता परन्तु उसकी मेहमान लड़की कृष्णा जो कुछ डरी हुई थी, दरवाजा खोलने का आग्रह करती है लेखक बस इतना ही कहता है कि वह और पत्नी उसके लिए बहुत परेशान रहे हैं। वह फिर से चिंतन में डूब गया तथा सोचने लगा कि उसकी दादी नानी के गीतों के राम, लखन और सीता तो अभी भी वन-2 भीग रहे थे। वह शब्दों के जंगल में खो जाता है राम निर्वासन को सोचते-2 उसे अपनी एक दिन की मेहमान लड़की के रात के देर से लौटने के कारण चिंता हो जाती है उसे सीता का ख्याल आ जाता है। इस घटना को राम का मुकुट या सीता का सिंदूर के भीगने की आशंका से जोड़े या न जोड़े।

पुन: उसका ध्यान इतनी अबंध कौसल्या के कंठ में बंसी हुई एक अकंप ध्वनिमयी कौसल्या की ओर चला जाता है।

→ सदाचार का तावीज व्यंग्य रचना का सार लिखिए।

सदाचार का तावीज प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई जी एक महत्वपूर्ण व्यंग्य रचना है इस रचना मे उन्होंने भ्रष्टाचार की व्यापकता और उसके उन्मुलन का उपाय बताया है जो इस प्रकार है—

एक राज्य मे इस बात को लेकर जब बहुत हल्ला मचा कि राज्य में भ्रष्टाचार बहुत बढ गया है, तब वहां के राजा ने अपनी सभा बुलाकर अपने दरबारियों के सक्ष इस समस्या को रखा तथा उन्हे कहा कि वे जहां कहीं भी भ्रष्टाचार को ढुंढ कर लाए राजा के दरबारियों ने इसमे असमर्थता जाहिर कि और वे सुमक्ष भ्रष्टाचार को नही देख सकते साथ ही उन्होंने सुझाव दिया कि राज्य को विशेषज्ञ समझी जाने वाली जाति अवश्य ही भ्रष्टाचार को ढुंढ सकती है राजा ने भ्रष्टाचार को खोजने का कार्य विशेषज्ञो को सौंप दिया। विषज्ञो ने दो महीने बाद आकर दरबार मे बताया की भ्रष्टाचार हाथ की पकड़ मे नही आता वह स्थुल न होकर सूक्ष्म है पर सर्वत्र है।

उसे देखा नहीं जा सकता केवल अनुभव
किया जा सकता है तो आजकल भ्रष्टाचार
ईश्वर है उन्होंने कहा कि उसके भवन
यहां तक की उसके सिंहासन मे भी
है पिछले मास जब राजा के सिंहासन
का रंग हुआ तो उसका बिल दुगना
हो गया था उसमे से आधा घुस के
रूप मे उपयोग हुआ था वह
इस भ्रष्टाचार के कारण राजा काफि दुः
तक बेचैन था उसने एक उल्टे पैर
के ताबीज के लिए प्रयोग किया कि
भ्रष्टाचार मिट जाए । राजा के कहने
पर दरबारियों ने दरबार मे एक साधु
पेश किया जिसने सदाचार के ताबीज
बनाया था साधु ने राजा को बताया
कि भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा
मे होता है। वह बाहर नहीं आता जब
विधाता मनुष्य को बनाता है तो किसी
की आत्मा मे ईमान की कल फिट
कर देता है और किसी की मे
बेईमानी कि इन आत्मा मे से ईमान
और बेईमानी के स्वर निकलते है
जिनको आत्मा की पुकार कहते है।
इस ताबीज से लोग की आत्मा मे
से सदाचार के स्वर निकलते थे और
राजा ने साधु को अब करोड़ो
ताबीजो का ठेका दे दिया था

साथ ही उसे सदाचार के ताबीज बनाने
का कारखाना भी खोलने के लिए पाँच
करोड़ पेशगी भी दे दी अखबारों में
में भी यह समाचार छाप गया और साथ
ही ताबीजें भी आ गए अब हर
सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक-एक
ताबीजें बांधा गया था कुछ दिन
बाद राजा उन ताबीजों की कार्यशैली जानने
के लिए गया था उस दिन २ तारीख
थी एक दिन पहले ही तनख्वाह मिली
थी एक दिन एक कर्मचारी को राजा
ने कई कामों के लिए पाँच रुपये दिए
तो राजा को बाहर से भगा दिया और
राजा यह देखकर बहुत खुश हुआ था
कुछ समय के पश्चात राजा भेष बदलकर
आया और फिर कर्मचारी को पाँच का
नोट दिया लेकिन इस बार उसने नोट
को जेब में रख लिया और राजा
ने उसका हाथ को पकड़ लिया और कहा
कि आपने ताबीज नहीं बांधा है
क्या उसने बाहा को ऊपर करके
दिखाया तो ताबीज से कुछ स्वर
निकल रहे थे
अरे आज तो इकतीस
है आज तो ले लो।

6 सदाचार का तावीज

व्यंग्य रचनाकार

हरिशंकर परसाई

→ हरियाणवी में रचित उपन्यास साहित्य का परिचय दिजिए

हरियाणवी में रचित उपन्यास उपन्यास साहित्य की दृष्टि से हरियाणवी को बहुत अधिक वैभव सम्पन्न नहीं कहा जा सकता क्योंकि हरियाणवी भाषा में अभी तक बहुत अधिक उपन्यास नहीं लिखे गए है हाल तक हुए के वर्षो के अनुसार हरियाणी भाषा में तीन उपन्यासों का प्रकाशन हुआ है। ये तीनो उपन्यासो है झाडुफिरी, फफा कुदरणी एव समझणिए की मर। इन से पहले दो का लेखक श्री राजाराम शास्त्री है तथा तीसरे उपन्यास का लेखक डॉ. श्याम सखा। श्याम है। अत: हरियाणवी उपन्यासो का विकासात्मक परिचय इन तीनो से ही दिया जा सकता है। प्रथम दो उपन्यासो के लेखक श्री राजाराम शास्त्री का जन्म 1918 ई में हिसार के टोहाना कस्बे में हुआ था उन्होंने अ हरियाणवी भाषा और ज्योतिष विद्या लेखक की विशेष ख्याति प्राप्त कि है। हरियाणवी और उर्दू हिन्दी भाषाओ की जननी है। सन 1963 में हरियाणवी लोक मंच की तथा सांग को विशेष प्रतिष्ठा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी इन्होंने हरियाणवी भाषा में उक्त दो उपन्यासो सहित कुल ग्यारह उपन्यास लिखे तथा तीन सौ से अधिक रेडियो रुपकों एवं अनेक लोकिकी ग्रंथो की रचना भी कि थी।

इनकी मृत्यु २००२ ई में हुई थी।

झाडु फिरी श्री राजाराम शास्त्री विरचित एक समाजिक उपन्यास है। उपन्यास का कथानक हमारे समाज का सजीव चित्रण है उपन्यास मे दो नायक नायिकाओ की कथा है जिसमे एक नायक वैसे तो लडकी को पंसद करके विवाह करता है परन्तु भुल से वह किसी दूसरी लडकी को पंसन्द कर आता है जब विवाह के बात खुलती है तो भूल का ज्ञान होता है वह उस लडकी को त्याग देता है। अचानक से दूसरे नायक की शादी होती है और प्रथम दर्शन के बाद उसे त्याग कर चला जाता है। पहले नायक की पत्नी सुशील है और वह अपनी सेवा से अपने पती का दिल जीत लेगी लेकिन दूसरे नायक की पत्नी नारियल के तरह है बाहर से कठोर और अन्दर से विनम्र है। उपन्यास मे लेखक ने दो की दूर बनो वैज्ञानिक रूप से दोनो जोडो के घात प्रतिघातो तथा सघोषो का चित्रण किया है।

~~श्री~~ राजाराम शास्त्री कृत दूसरा उपन्यास श्री फफा कुट्टनी है, यह भी समाजिक सरोकारो वाला उपन्यास है हालाकि अभी इस उपन्यास पर इतनी चर्चा नही हुई है, जितनी झाडुफिरी उपन्यास की हुई थी।

~~हरियाणवी~~ हरियाणवी भाषा मे रचित तीसरा उपन्यास डॉ. श्याम सखा 'श्याम' द्वारा रचित समझणीए की मर है डॉ. श्याम सखा 'श्याम' का जन्म 1948 ई. मे रोहतक के श्री शास्त्री रतिराम के यहां हुआ था इन्होने एम. बी बी. एस., सी. पी. पी., एल. एल. बी. की उपाधिया प्राप्त की है ये हरियाणवी साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित होने वाली पत्रिका हरिगंधा के मुख्य सम्पादक भी है उक्त उपन्यास के अतिरिक्त अब तक इनके एक टुकड़ा दर्द (काव्य संकलन) तथा अकथ (हिन्दी कहानी संकलन) प्रकाशित हो चुका है। समझणीए की मर, स्वार्थ केन्द्रित राजनीति को अभिव्यक्त करता है उपन्यास का कथानक दो वक्ताओं द्वारा दो श्रोताओं को सुनाई गई बातचीत पर आधारित है सम्पूर्ण हरियाणवी की संस्कृति की झलक दिखाई देती है। लेखक ने स्वार्थपूर्ण राजनीति और कुलषित होती जा रही पंचायती न्याय प्रणाली का यथार्थ एक मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है।

हरियाणवी उपन्यास अभी अपनी शैशवावस्था मे ही है।

हरियाणा के

'प्रसिद्ध उपन्यास'

I 'झाडू फिरी'

II 'फफा कुटनी'

III 'रामसनिया की मरे'

→ हरियाणवी कहानी - साहित्य की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

हरियाणवी कहानी साहित्य की विकास : हरियाणवी भाषा में कहानी लेखन इसके उपन्यासों की तुलना में बहुतायात में हुआ है विभिन्न विद्वानों द्वारा की गई शोध के आधार पर हरियाणा के मुर्धन्य साहित्यकार श्री माधव प्रसाद मिश्रा द्वारा रचित कहानी 'लड़की की बहादुरी' को हरियाणवी की पहली कहानी माना जाता है। कुछ विद्वान जिनमे डॉ. मुरारी लाल गोयल प्रमुख है वे तो इस कहानी को हरियाणवी ही नही हिंदी की भी पहली कहानी माना है। उक्त कहानी का कथानक समाजिक है कहानी के अनुसार रामली नामक एक दल्ली एक ब्राह्मण कन्या को झांसा देकर लाला गुदड़मल के पास व्यभिचार के लिए ले जाती है। गुदड़मल का नौकर जस्सा जाट उस कन्या की रक्षा करता है। इसका विवेचन निम्नलिखित कहानीयो को कहानीकारो के माध्यम से रचित किया गया है।

I डॉ॰ नानक चंद शर्मा

डॉ. नानकचंद शर्मा का हरियाणवी कहानी समाहित्य की समृद्धि मे महत्वपूर्ण योगदान है उसके रचित डाकी डाकखाना हरियाणवी भाषा कहानीयो की दूसरी कहानी है कहानी हास्य और व्यंग्य से परिपूर्ण है। कहानी का नायक हंसी-विनोद से भरपूर एक नौजवान है।

2 रघुबीर सिंह मथाना

इनका हरियाणवी कहानी साहित्य के विकासक्रम में बहुत योगदान दिया है। 1922 ई. एक कहानी 'अपराधिक आँकड़े' प्रकाशित हुआ यह कहानी पुलिस थाने के वातावरण से है। कहानी में थाने के वातावरण थाना प्रभारी की बौखलाहट तथा पुलिस कर्मचारियों की कार्यप्रणाली का मुर्त रूप प्रकट करती है।

3 कंवल हरियाणवी

इनका भी हरियाणवी कहानी साहित्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान है। 1995 ई. में उनकी एक संग्रह लोक पुरानी मोड़ नवा प्रकाशित हुआ इस कहानी संग्रह में कुल 12 कहानियां है। इसके अतिरिक्त इन कहानी में समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों अंधविश्वासपूर्ण परम्पराओं, वृद्धों की उपेक्षा, चरित्रहीनता आदि को उकेरा गया है।

4 डॉ. राजबीर धनखड़

ने भी हरियाणवी साहित्य कहानी में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई है। अब के इनके दो हरियाणी कहानी संग्रह प्रकाशित हुई है। इनका पहला कहानी संग्रह मार्च 1998 ई में 'सरपन्चणी' के नाम से प्रकाशित हुआ। इस कहानी संग्रह में 23 कहानियां है इसका दुसरा कहानी संग्रह सन 2000 ई में प्रकाशित हुआ। 'स्याणपत' नाम से प्रकाशित इस संग्रह में कुल 24 कहानियां है।

→ हरियाणवी नाटक साहित्य की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए।

हरियाणवी का नाटक साहित्य —

हरियाणा नाट्य साहित्य उसके उपन्यास एवं कहानी साहित्य की भांति बहुत अधिक विस्तृत नहीं है। हरियाणा के नाट्य साहित्य की विकास यात्रा का विवेचन झलकी, जिन्हें रेडीयो नाटक भी कहा जाता है, प्रहसन तथा एकांकी आदि के विवेचन के माध्यम से किया जा सकता है —

I झलकी अथवा रेडियो नाटक

हरियाणवी भाषा मे नाटक साहित्य का आरम्भ झलकी और रेडियो नाटकों से माना जाता है। उन्नीसौ सत्तर व अस्सी के दशकों मे सर्वप्रथम चौ. प्रतापसिंह द्वारा रचित झलकी ताऊ-झगड़ू ने हरियाणा मे बहुत बड़ी धूम मचाई इसी दशक मे श्री राजाराम शास्त्री ने लगभग 300 एकांक हरियाणवी, उर्दू तथा हिंदी भाषाओं मे लिखे। इस दौर मे दयाराम मितल का रेडीयो 'मन्ने चाहिये दूम छेकरो' भी बहुत चर्चित रहा है। हरियाणवी नाट्य साहित्य को झलकी अथवा रेडियो नाटक के रूप मे विकसित करने मे श्रीमती चन्द्रमालिका द्वारा रचित गाडी एवं नितनेम श्री बलजीत सिंह के द्वारा रचित पाप का पटरा, पंच फैसला, चुटकी की करामात आदि नाटकों मे महत्वपूर्ण योगदान है।

2 प्रहसन

प्रहसन वे नाटक होते है जिनमे हास्य तथा व्यंग्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है वैसे मौखिक रूप मे तो हरियाणा मे हास्य व व्यंग्य की परम्परा अत्यंत प्राचीन रही है परन्तु लिखित रूप मे हास्य व्यंग्य की इस परंपरा को प्रहसन का रूप देने मे प्रसिद्ध हरियाणवी साहित्यकार श्री राजाराम शास्त्री की भूमिका प्रथम और सर्वप्रमुख है। हरियाणवी पहला प्रहसन संकलन 1983 ई. मे धूलिया का पिटारा प्रकाशित हुआ इस संकलन मे कुल ग्यारह प्रहसन है।

3 एकांकी

एकांकी का अर्थ एक ऐसे नाटक से होता है जिसमे एक अंक होता है। हरियाणवी भाषा मे रचित एकांकीयो का भी महत्वपूर्ण योगदान है हरियाणवी भाषा का 1950 मे हुआ था लेकिन सही मायनो मे ई. मे 1955 आरम्भ हुआ था इस वर्ष डा. राजवीर धनखड द्वारा रचित एकांकी संग्रह बिन्धया सो मोती प्रकाशित हुआ इस एकांकी मे कुल नौ एकांकी क्रमश सम्मिलित है इस पश्चात 1998 ई मे पं. किशनचंद द्वारा एकांकी संग्रह लगाम नाम से प्रकाशित हुआ है श्री रामफल चहल द्वारा 1998 ई रचित एक एकांकी संग्रह निहंग की जड नाम से प्रकाशित हुआ था 1991 ई मे प्रख्यात साहित्यकार श्री रघुबीर सिंह मथाना का एकांकी संग्रह बदलते ग्राम के नाम से प्रकाशित हुआ।

प्रत्रकारिता के महत्व का विवेचन किजिए

प्रत्रकारिता के महत्व

पत्रकारिता आज के सभ्य समाज के लिए एक नितान्त आवश्यक कला है। इसी कला के फलस्वरूप पत्रकार विभिन्न समाचारो को संकलित कर और समाचारपत्रो द्वारा संपादित करके उन्हे पाठको तक पहुचाता है दिन का प्रत्येक क्षेत्र प्रत्रकारिता से लाभान्वित होता है पत्रकारिता के महत्व को निम्नलिखित शीर्षको के अंर्तगत विभाजित किया जा सकता है।

I समाज क्षेत्र मे प्रत्रकारिता की उपयोगीता

पत्रकारिता समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है समाज अनेक लोगो से बनता है और वे लोग एक दुसरे पर आधारित होते है मानव संबध का निर्माण करने मे पत्रकारिता के माध्यम से समाज के विकास मे जो असख्य बाधाए और कठिनाई उपस्थित होती है पत्रकारिता समाज योग कार्य मे योगदान देता है। समाज की रुढियो व अंधपरम्पराओ को दूर करने मे पत्रकारिता का बहुत बडा योग दान है।

2 राजनीतिक क्षेत्र मे पत्रकारिता का योगदान

आज राजनीतिक हमारे राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है कि आधुनिक युग मे राजनीतिक हमारे

घर परिवार मे भी प्रवेश बन चुकी है। अत: हम न तो राजनीतिक की उपेक्षा कर सकते है न ही राजनीतिज्ञो की क्योकि राजनीतिको को समाचार पत्रो मे प्रमुख स्थानो दिया जाता है प्रकार राजनीतिक समस्याओ को केवल प्रस्तुत ही नहि करते बल्कि उनकी व्यवस्था देते हुए उन पर टीप्पणी भी करते है। समाचार पत्र जनमत का निर्माण भी करते है राजनीतिक से जुडी हर प्रकार की बाते लोगो तक पहुचाई जाती है नेताओ के भाषण, रैली. आदि को लोगो तक समाचार पत्रो के माध्यम से ही पहुचाया जाता है।

3 सास्कृतिक द्दष्टि से पत्रकारिता का महत्व

मानव के समाजिक तथा अध्यात्मिक विकास से ही उनकी सास्कृतिक का निर्माण होता है ~~समाज~~ सास्कृति ही मानव जाति का आधार स्तम्भ ~~है~~ है वह हमेशा समाज को विकास की ओर ले जाती है। समाचार पत्र समाज के सास्कृतिक पक्षो को उनको केवल उजगार करते है बल्कि उसके प्रति लोगो मे लगाव भी उत्पन्न करते है पत्रकारिता से हमारी सास्कृतिक धरोहर रक्षा करती है। नृत्य, नाट्य, लोक-साहित्य लोक मंच, लोक कला, लोग आदि से सम्मलित होते है।

4 शिक्षा के क्षेत्र मे पत्रकारिता का योगदान

मानव के लिए शिक्षा का महत्व आरम्भ से रहा है क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही हम ज्ञान - विज्ञान प्राप्त करते है आधुनिक युग मे शिक्षा का विशेष महत्व है जिस समाज मे शिक्षा की समुचित व्यवस्था नही होती वह समाज पिछड़ जाता है और गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है समाचार पत्रकारिता एक प्रकार से लोगो को शिक्षित करना का कार्य करता है समाचार पत्रो के द्वारा शिक्षा की महत्वपूर्ण बाते पाठको तक पहुँची है अतः शिक्षा जगत मे समाचारपत्र और पत्रिकाओ का विशेष योगदान है।

5 राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता का महत्व

राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता का विशेष महत्व है, क्योंकि पत्रकारिता को लोकतन्त्र का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ माना जाता है आज संसार के अधिकांश देशो मे लोकतन्त्र शासन प्रणाली प्रचलित है भारतेन्दु युग के विभिन्न पत्रकारो और पत्रिकाओ ने ही पाठको मे राष्ट्रीय भावना और स्वदेशी गौरव की भावना को उत्पन्न किया। भले ही उस समय के पत्रकारो को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अत्याचारो का सामना करना पड़ा था।

6 खेल कूद आदि की दृष्टि से पत्रकारिता का योगदान

खेल कूद से सम्बधी जानकारी प्राप्त करने के लिए भी पत्रकारो की विशेष भूमिका निभाती है। क्योकि समाचारपत्रो द्वारा ही हमें अग्रिम तथा चल दोनो प्रकार के विशेषो मे खेलो की जानकारी प्राप्त होती है। अग्रिम लेखो के अतर्गत खेल मे भाग लेने वाले खिलाडीयो क्रिडा व्यवस्था तथा खेल विशेषज्ञ की पृष्ठ भूमिका को लिया जाता है। कई पत्रिकाओ के प्रकाशन के फलस्वरूप भी खेलो की भावना को अत्याधिक बढ़ावा मिल रहा है जैसे युग खेल - खिलाडी, क्रिकेट सम्राट आदि कुछ ऐसी पत्रिकाए है।

7 अंतराष्ट्रीय क्षेत्र मे पत्रकारिता का योगदान

वैज्ञानिक विकास के कारण आज हमारा संसार बहुत छोटा सा हो गया है। समाचार पत्रो के माध्यम से हम घर बैठे संसार की गतिविधियो और समाचारो को तत्काल जान लेते है। अमेरिका मे यदि कोई घटना घटती है तो वह लाइव दूरदर्शन द्वारा तत्काल सारे संसार मे पहुचाती है। सभी अंतराष्ट्रीय समाचार सभी देशो मे लाइव हो जाता है अतः अतः राष्ट्रीयय स्तर पर पत्रकारिता का महत्व स्वतः सिद्ध है।

पत्रकारिता के विभिन्न प्रकारो पर प्रकाश डालिए

प्रत्रकारिता के प्रकार

जीवन की विविधता और नये-२ साधनो के अविष्कार ने पत्रकारिता को बहुआयामी बना दिया है। वर्तमान काल क्योंकि विशिष्टीकरण का काल है अत: प्रत्रकारिता के क्षेत्र मे आने वाले पत्रकार अपनी रूचि और प्रवृति के अनुसार अपने लिए विशीष्ट क्षेत्रो का चुनाव कर रहे है इन का परिमाणस्वरूप निम्नालिति रूप से सामने आया है जो इस प्रकार है।

I अन्वेषी पत्रकारिता

जिस प्रत्रकारिता मे जासूसी को प्रस्तुत किया है उसे अन्वेषी या अनुसंधानात्मक प्रत्रकारिता कहा जाता है इसमे प्रत्रकार अपनी प्रतिभा और तत्परता के बल पर शारीरिक जोखिम उठाकर गुप्तचर के रूप मे कार्य करते है इसके द्वारा समसायिक विषयो, घटनाओ, तथ्यो तथा स्थितियो का सूक्ष्म सर्वेक्षण कर अनुसंधान के आधार पर चौंकाने वाले निष्कर्ष निकाले जाते है।

२ आर्थिक पत्रकारिता

अर्थ या पैसा जीवन का एक प्रमुख तत्व है इसके बिना जीवन को चलाना अत्यंत कठिन है। अर्थ से जुड़े हुए विभिन्न कार्यकलापो और गतिविधीयो को उद्घाटित करने के लिए इस प्रत्रकारिता का विकास हो है।

3 ग्रामीण पत्रकारिता

भारत की अधिकांश जनता गावो मे बसती है गांव, देश स्वतंत्र होने के पचास वर्ष बाद भी पिछडे हुए है सुदूर गावो मे नयी चेतना तथा विकास के स्वर को समाचारपत्र ही पहुंचा सकते है। ग्रामीण स्वास्थ्य, कुटीर उद्योग, लोककलाओ, लोक सांस्कृति आदि को समर्पित पत्रकारिता ही ग्रामीण पत्रकारीता है।

4 व्याख्यात्मक पत्रकारिता

जैसा की इसके नाम से स्पष्ट है, इस पत्रकारिता के अंतर्गत समाचार ~~कार्यालय~~ कार्यालय मे समाचार एजेंसियो तथा संवाददाताओ द्वारा प्रेषित समाचारो का विश्लेषण उनकी पृष्ठभूमि और उनके भविष्य मे वाले परिणामो का व्याख्यात्मक पत्रकारिता द्वारा समाधान दिया जाता है।

5 विकास पत्रकारिता

जिस पत्रकारिता मे सामाजिक आर्थिक तथा वैज्ञानिक प्रगति से सम्बंधित विकास के समस्त पक्षो पर प्रकाश डाला जाता है उसे विकास पत्रकारिता कहते है। केन्द्र सरकार द्वार प्रकाशित 'योजना' पत्रिका विकास - पत्रकारिता का उदाहरण प्रस्तुत है

6 संदर्भ पत्रकारिता

इस पत्रकारिता मे जो लोग कार्य करते है वे स्तम्भ - लेखको, संवाददाताओ

प्रशासनिक अधिकारियों तथा संपादकों को आवश्यक पठन संदर्भों की आपूर्ति करते है।

7 संसदीय पत्रकारिता

इस पत्रकारिता के अंतर्गत संसद के दोनों सदनों, प्रादेशिक विधान सभाओं परिषदों की कार्यवाही की रिपोर्टिंग अत्यन्त सावधानी से की जाती है। संसद की कार्यवाही प्रकाशन अधिनियम 1956 ई. को पूरी तरह से समझकर ही समाचार पत्र के लिए सामग्री तैयार की जाती है।

8 खेल पत्रकारिता

खेलों के विषय मे दो प्रकार के समाचार लिखे जाते है - अग्रिम तथा चल। अग्रिम लेखों मे सम्मिलित होने वाले टीमें, खिलाड़ियों के नाम, क्रीडा व्यवस्था और खेल विशेष की पृष्ठभूमि को दिया जाता है। जबकि चल लेख मे खेल का निरूपण और समीक्षात्मक विश्लेषण किया जाता है।

9 रेडियो पत्रकारिता

रेडियो पत्रकारिता के अंतर्गत समाचार दर्शन, समाचार बुलेटिन, सामयिक समीक्षा ध्वनि संपादन, समाचार वाचन तथा अन्य प्रकार की प्राविधिक जानकारी को समाहित किया है।

10 दूरदर्शन पत्रकारिता

बीस वर्षों से इस पत्रकारिता का यथार्थ विकास हुआ है चित्र दर्शन और ध्वनि के प्राविधिक ज्ञान लेखन और वाचन की

की क्षमता तथा इलेक्ट्रॉनिकी जानकारी के द्वारा इसमें सफलता प्राप्त होती है।

11 फोटो पत्रकारिता

चित्रों का प्रभाव शब्दों से अधिक होता है। सुनी-सुनायी बात और आँख देखी बात में पर्याप्त अन्तर होता है। इस पत्रकारिता में फोटो खींचने का ज्ञान तथा समाचार चेतना का होना अत्यन्त आवश्यक है।

12 विधी पत्रकारिता

इस पत्रकारिता के अन्तर्गत देश के कानूनी, मौलिक अधिकार, मानहीन, अदालत अवमानना नियम, कापी राइट अधिनियम आदि अनेक विधियाँ आ जाती हैं विधी पत्रकार को इस प्रकार की विधियों और कानूनों की जानकारी होनी चाहिए तभी वह इस प्रकार की पत्रकारिता करने में सफल हो सकता है

13 ~~अंत~~ अंतरिक्ष पत्रकारिता

आधुनिक काल में सूचना का आधार आकाशीय ग्रह और उपग्रह बन चुके हैं पृथ्वी अंतरिक्ष में घुमती है और सूर्य का चक्कर लगाती है। चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घुमती है, मुद्रण, संप्रेषण और प्रकाशन के क्षेत्रों में हो रहे परिवर्तन अंतरिक्ष पत्रकारिता के अर्न्तगत है आकार उसकी काया बदल रहे हैं।

शीर्षक के विभिन्न प्रकारो पर प्रकाश डालिए।

शीर्षक के प्रकार

विभिन्न प्रकार के समाचारो की भाव - भंगिमा एवं शब्दावली भिन्न होती है जैसे राजनीतिक, समाचारो, अपराध एवं दुर्घटना आदि के समाचार की भाषा सीधी - सपाट अथवा व्यंजनात्मक हो सकती है वही खेल, संगीत आर्थिक वैज्ञानिक आदि समाचारो के शीर्षको की भाषा एवं शब्दावली घुमावदार होती है।

स्थायी शीर्षक

अधिकांश पत्र - पत्रिकाओ मे कुछ कॉलम स्थायी रूप से छपते है। उदाहरणार्थ, सम्पादक के नाम पत्र के लिए आपके पत्र महीलाओ की कार्य से सम्बन्धित समाचारो के लिए महिला जगत बाजार भाव बताने वाले समाचारो के लिए आज के भाव आदि। इस प्रकार शीर्षको न केवल स्थायी होते है। बल्कि इसके छपने के स्थान और स्वरूप लगभग निश्चित होते है।

चित्रो के शीर्षको

चित्रो के नीचे दिये जाने वाले शीर्षक को कट लाईन एवं ऊपर लिखे जाने वाले शीर्षक को कैपशन कहते है।

पत्रिकाओ के शीर्षक

दैनिक पत्रो शीर्षक साप्ताहिक पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि पत्रिकाओं के शीर्षकों से प्रायः भिन्न होते है। रूपक, प्रतीत योजना तथा अलंकारिक वाक्प्रयोग, पत्रिकाओं

के शीर्षकों में चले जाते है, क्योंकि इससे शीर्षकों में प्राणवत्ता आ जाती है इसी कारण पत्रिकाओ के शीर्षक में इच्छानुसार अभिधा, व्यंजना और लक्षणा तीनो शक्तियों के प्रयोग करने सुविधा होती है। समाचारपत्रों मे हमे विभिन्न प्रकारों के शीर्षक प्राप्त होते है जिसका वर्णन इस प्रकार है—

I गगन रेखा शीर्षक

असामान्य एवं अभूतपूर्व समाचारो मे इस प्रकार का शीर्षक लगाया जाता है। समाचार पत्र की नाम-पट्टिका के ऊपर यह शीर्षक दिया जाता है, इस समाचार के सामने समाचारपत्र की सत्ता भी गौण पड़ गई है।

2 बैनर शीर्षक

समाचार पत्र की नाम-पट्टिका के नीचे पूरी चौड़ाई मे बड़े टाईप मे दिये जाने वाले शीर्षक को बैनर शीर्षक कहते है।

3 आयताकार शीर्षक

ऐसे शीर्षकों की सभी पंक्तियां बराबर होती है और पूरे कॉलम की होती है।

4 हैगिंग इण्डेशन

ऐसे शीर्षक मे पहली पंक्तिये पूरे कॉलम की होती है, पर अन्य पंक्तियां बायी और स्थान छोड़कर दाहिने ओर ऊपरी पंकित से मिलायी जाती है।

5 सीढ़ी शीर्षक

इसमे कमसे कम दो या दो से अधिक पंक्तियां का प्रयोग होता है। एक सीढ़ी का भाव होने लगता है।

6 विलोम स्तूपी शीर्षक

इस प्रकार के शीर्षक मे कम से कम तीन पंक्तियां होनी चाहिए । तीन से अधिक पंक्तियाँ भी हो सकती है ये ऊपर से नीचे की ओर क्रमशः छोटी होती हुई एक स्तुप जैसी लगती है।

7 कटि शीर्षक

इस प्रकार की पंक्तियां की शीर्षक मे तीन पंक्तियां होती है जिसमे पहली और तीसरी पंक्ति तो पूरे कॉलम तक फैली होती है जबकी बीच वाली पतली होनी चाहिए।

8 विलोम सोपानी शीर्षक

सोपानी शीर्षक के विपरीत इस शीर्षक के विपरित इस शीर्षक मे पंक्तियाँ इस सजायी जाती है कि पहली-दूसरी और तीसरी दाहयनी ओर छोटी रहे।

9 ब्लॉक हैड शीर्षक

इस शीर्षक को इस प्रकार लिखा जाता है कि लगता है।शीर्षक मे ब्लाक बन गये है।

10 पूर्णपाती शीर्षक

इस प्रकार के शीर्षक मे केवल एक ही पंक्ति होती है जो एक या अधिक लाईनो मे लिखी जा सकती है।

11 क्रास लाईन शीर्षक

समाचारो के बीच मे दिया जाने वाला शीर्षक क्रास - लाईन शीर्षक कहलाता है।समाचार जगत मे इसे - क्रासर भी कहते है। इसका प्रयोग प्रायः समाचारो के उपशीर्षकों के रूप मे किया जाता है।

12 फलश्रा लेफट शीर्षक पद शीर्षक

Title (शीर्षक)
का विवरण

12 फलस लेफ्ट शीर्षक

यह शीर्षक कम से कम दो पंक्ति या अधिक होता है इसमें शीर्षक की सभी पंक्तियों को बायीं और बराबर रखा जाता है तथा दाहिनी और का भाग बड़ा हो सकता है।

13 कपाली शीर्षक

अमेरिकी पत्रकारिता में इसे आईबो शीर्षक कहते है। यह मुख्य शीर्षक के प्रसंग को बताने के लिए किया जाता है। कुछ लोग इस स्ट्रैप लाइन शीर्षक भी कहते है।

14 उद्धरण शीर्षक

भाषणों, वक्तव्यों, साक्षात्कारों तथा संवाददाता सम्मेलनों वाले समाचारों में बहुधा इस प्रकार के शीर्षकों का प्रयोग किया जाता है।

15- प्रश्नात्मक शीर्षक

कभी-2 समाचारों की सत्यता की पुष्टि नही हो पाती और महत्व की दृष्टि से समाचार देना आवश्यक होता है। ऐसे शीर्षक के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न लगाया जाता है।

16 शोल्डर शीर्षक

शीर्षक का कठिन एक आमसाधप यह है इसमें कोई शीर्षक नही लगाया जा सकता है बल्कि इसमें से समाचार को लिखा जाता है। जो शीर्षक जैसा लगाता है।

17 कट हैड शीर्षक

उसकी दूसरी- तीसरी पंक्तियाँ पहली पंक्तियां से काफी छोटी होती है। जिसे चित्र या मैटर से भरते है।

18 **शेषांश शीर्षक** समाचार पत्रों को बड़े समाचारों का शेषांश प्रायः अन्य पृष्ठों पर देना पड़ता है ऐसे में शेषांश वाले पृष्ठ पर भी समाचार का छोटा सा परिचयात्मक शीर्षक देना पड़ता है।

→ सपांदकीय लेखन क्या है ? उदाहरण सहित स्पष्ट किजिए ।

सपांदकीय लेखन —

सपांदकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले सपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है, सपांदीय के जरीये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते है। सपादकीय किसी विशेष व्यक्ति का विचार नही होता और नही उसे किसी के नाम के साथ छापा जा सकता है। सपादीकय लेखन मे केवल अखबार के सपादक उसके सहयोगी पर होता है कोई बाहर का लेखक या पत्रकार सपादकीय नही लिख सकता है।

हिन्दी के अखबारो मे कुछ मे तीन कुछ मे दो और कुछ मे केवल एक ही सपादीकीय लेखक होता है।

मुल्यांकन का दायरा

अगले विद्यालयी शिक्षा सत्र से विद्यार्थियो के सतत और व्यापक मुल्यांकन की प्रकिया लागु हो जाएगी। इससे पाठ्यपुस्तकों का बोझ और तनाव परिक्षा मे सरकार का मकसद किसी हद तक पुरा हो सकता है फिलहाल लीखित और प्रायोगिक परिक्षाओ के आधार पर मुल्यांकन का प्रावधान है। वह खेलकुद संगीत, वाद - विवाद,

जैसे अनेक रचनात्मक गतिविधियों में भी शारीक होता है। इनका पाठ्यक्रम में सीधे-2 कोई संबंध भले ही न हो पर ये विद्यार्थी के सीखने और समझने की प्रक्रिया का हिस्सा होती है इसलिए इस बात की जरुरत लंबे समय से महसूस की जा रही है कि विद्यार्थी का समग्र मूल्यांकन होना चाहिए। यशपाल भी विद्यार्थी के समग्र मुल्यांकन के पक्षधर रहे हैं। इसके लिए सौ में से बीस अंक निर्धारित किए गए हैं। इन्हें विद्यार्थी के वार्षिक और बोर्ड परिक्षाओं में प्राप्त अंकों में भी जोड़ा जाएगा। हालांकि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में आंतरिक पद्धति पहले से लागू है और इसके कई राज्यों में इस पर विचार चल रहा है लेकिन इसके अंक वार्षिक और बोर्ड परिक्षा के अंकों में जोड़े जाने का प्रावधान न होने के कारण समग्री मूल्यांकन का मकसद पूरा नहीं हो पा रहा है। एन सीईआरटी की नयी पाठ्चर्या विद्यार्थियों को खेल - खेल में अपने आसपास के वातावरण और रोजमर्रा की जिंदगी से भी सीखने - सिखाने पर जोर देने के कारण अनेक विद्यार्थी खेलकूद सांस्कृतिक सामाजिक और कलात्मक गतिविधियों में दिलचस्पी नहीं होते। अभिभावक भी बच्चो को इनके प्रति प्रोत्साहित नहीं करते। निजी स्कूलों में सह- शैक्षिक गतिविधियों पर जरूर कुछ ध्यान दिया जाता है

मगर ज्यादातर सरकारी स्कूल इनके प्रति उदासीन ही दिखाई देते हैं सामग्री मूल्यांकन की पद्धति लागू होने से वे ऐसी गतिविधियाँ आयोजित करने के लिए बाध्य होंगे। हालांकि इस प्रवृति में विद्यार्थी की सामाजिक सक्रियता और अनुशासन जैसे गुणों का भी मूल्यांकन आवश्यक होगा। इसलिए अध्यापकों की भूमिका अध्यापन तक सीमित नहीं रहेगी। शिक्षणेतर गतिविधियों की बाबत अध्यापकों में जागरूकता और जानकारी की कमी भी विद्यार्थियों की कलात्मक, सांस्कृतिक या सामाजिक कार्य संबंधी क्षमताओं के विकास में रोड़ा साबित होती है इसलिए गतिविधियों के मद्देनजर अध्यापकों के प्रशिक्षण पर भी ध्यान देना होगा।

सम्पादकीय लेखन का अर्थ

भारत मे प्रेस की वर्तमान स्थिति की विवेचना किजिए

भारत मे प्रेस की वर्तमान स्थिति

हमारे समाचारपत्रो मे राजनीतिक मामलो को बहुत महत्व दिया जाता है. इनके कॉलम राजनीतिक मामलो से संबंधित सामग्री से भरे होते है खेल-कूद को भी महत्व दिया जाता है लेकिन जितना दिया जाता है वह पर्याप्त नही है हमार देश मे सिर्फ खेलकुद के ~~[illegible]~~ दैनिकपत्र नही निकालते। हा कुछ खेलकुद साप्ताहिक अवश्य प्रकाशित होते है। धर्म, धन, स्वास्थ्य को उचित महत्व नही दिया जाता। बहुत से समाचारपत्रो राज्यो की राजधानीयो मे भी अपने संवाददाता नही रख पाते। कुछ मामलो मे कोलकता, चेन्नई, मुंबई और दिल्ली जैसे चार मुख्य नगरो मे भी। इसलिए उनमे अपने राज्य के बाहर के बहुत कम समाचार होते है और विश्व के समाचारो के मामलो मे तो बहुत असावधानी बरती जाती है। उनके विचार और व्याख्या बहुत कम होती है।

भारतीय भाषाओ के समाचारपत्र फिल्म साहित्य मे बहुत रूचि लेते है। ये समाचार अभिनेता - अभिनेत्रीयो के नीजी जीवन, निर्माधीन फिल्मो आदि के बारे मे होते है।

~~पत्रो का स्तर एक जैसा~~ हमारे देश मे समाचार पत्रो का स्तर एक जैसा नही है ऐसा इसलिए

कि पत्रकारिता के प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था नहीं कुछ वर्ष पहले पत्रकारिता की संख्या बहुत कम थी जिस तरह विद्यालयों मे कुछ सीखने के बाद काम करते है वैसे ही पत्रकारिता का कार्य था ब्रिटेन और फ्रांस इन दोनो देशो मे समाचार पत्र उद्योग को ही पत्रकारो पर खर्च करके प्रशिक्षण दिया जाता है। रूस, पोलैंड, जर्मनी, और हंगरी जैसे समाजवादी देशो मे प्रशिक्षण अनिवार्य होता है। और इसकी बहुत अच्छी व्यवस्था है।

निःसंदेह, अलग-२ समाचारपत्रो से पाठको की अलग-२ रुचि होती है किसी दुकानदार की क्रिकेट मे रुचि हो सकती है। दूसरी तरफ अर्थशास्त्री स्वाभाविक तौर पर वितीय समाचार और लेख भी दिए जाते है इन सभी विभिन्नताओ के बावजुद सभी समाचार ठीक-ठीक और निष्पक्ष ढंग से दिए जाने चाहिए और विचार मे गंभीरता और ~~संयम~~ संयम होना जरूरी है।

अब आप यह जान चुके है कि किसी समाचार पत्रो के बारे मे किन-२ आधारो पर राय बनानी चाहिए अच्छे बुरे का निर्णय किस प्रकार करना चाहिए।

अक्सर लोग पीत पत्रकारित की निन्दा करते देखे जाते है। इसका अर्थ होता है बुरी पत्रकारिता अशोभन पत्रकारिता गैर-जिम्मेदारी पत्रकारिता। लेकिन हमे इसे

मुहावरे की सावधानी से जांच करनी चाहिए वे उसे पीत पत्रकारीता का दोषी बनाकर बदनाम करते है

पीत पत्रकारिता का साधारण अर्थ बहुत स्पष्ट है। जब कोई समाचारपत्र जीवन की विकृतियो पर ज्यादा जोर देने लगे और पाठको का ध्यान अपनी ओर खीचने के लिए ज्यादातर अपराध, यौन तथा हिंसा संबंधी समाचार छापना शुरू करे जब वह अपराधियो की आत्मकथा प्रकाशित करने लगे या फिल्मी अभिनेता की कच्ची चिठा छापने लगे या किसी की जान लेने के बारे मे समाचार पत्रो मे भी छपने को पीत पत्रकारिता कहा जाएगा। ये सारी बाते रोकि कैसे जाए तो अश्लीलता और मानहानि आदि संबध मे कानून बने हुए है। वैसे बात कुछ अजीब सी लग सकती है लेकिन पीत पत्रकारिता बिलकुल समाप्त नही की जा सकती शायद समाप्त होने भी नही चाहिए। शायद पीत पत्रकारिता को रोकने का उपाय है कि पीत पत्रकारिता करने वाले पत्रो पर नजर रखने के लिए प्रेस ही अपने संगठन बनाये जो गलत रास्ते पर चलने वाले समाचारपत्रो

की निंदा करे। यह आजमाइश
भारत सहित कई अन्य देशों
मे की गई है और उसका नतीजा
अच्छा निकला है।

भारत मे प्रेस के भविष्य पर प्रकाश डालिए ।

भारत मे प्रेस का भविष्य

पत्रकारिता मे ऐसा आकर्षण , इसमे कुछ ऐसा जादू है। जो लोगो को अपनी ओर खीचता है। प्रत्येक सप्ताह युवा लोग मुझसे मिलकर पत्रकार होने की इच्छा प्रकट करते है लोगो का ख्याल है कि पत्रकार बडे-२ लोगो से बाते करने का , बडे निर्णयो के संबंध मे अंदरूनी बाते जानने का जम्बो जेट या दो इंजन वाले विमानो पर दूरस्थ जगह यात्रा का अवसर प्राप्त है। लेकिन पत्रकारो के बारे मे यह सच नही है। पत्रकारो के बहुत सारे काम बहुत कठिन है। बहुत सारे काम ऐसे होते है जिन्हे कमरे मे बैठकर करना पडता है।

इसके बावजुद पत्रकारिता मे कुछ विशेष अवश्य है, यदि समाचारपत्रो निःस्वार्थ भाव से और निर्भय रहकर चलाए जाए तो सचमुच वे अन्याय करने वाले से लोहा ले सकते है बुराई और बेइमानी का भंडा फोड सकते है। लेकिन पाठको के बीच मे बहुत सी बाधाएं है जो उनको मूल काम करने से रोक देती है समाचार पत्रो के मालिक

जो सरकारी अधिकारी बाते प्रकट नही होने देना चाहते है लेकिन इन सभी बाधाओ को पार करते हुए समाचार सत्य को प्रकाश मे ला सकता है, गलत काम का भंडाफोड कर सकता है। जनता की आवाज उठा सकता है इसी आशा के साथ नए-2 लोग पत्रकारिता अपनाते है जैसे-2 समय बीता जा रहा है पत्रकारिता भी किसी अन्य व्यवसाय की तरह एक व्यसाय बनती जा रही है। अनेक साथ-2 समाचार पत्र मे काम करने वाले लोग अपनी सहकारी संस्था बनाकर भी ~~अखबार~~ अखबार निकाल सकते है।

भारत जैसे बडे देश मे जैसे-2 साक्षरता बढेगी समाचार और समाचारोपत्रो की मांग बढ़ती जाएगी। आज 13 करोड परिवारो के लिए समाचारो पत्रो की प्रतिदिन 90 लाख प्रतियां छपती है। आज से 98 से 99 प्रतिशत तक समाचारपत्रो मे ~~केवल~~ अधिक बिकते और पढे जाते है। कोलकता, चेन्नई, मुंबई और दिल्ली जैसे बडे नगरो मे सभी दैनिक समाचारोपत्रो की प्रकाशित प्रतियो मे से लगभग आधे खपत होती है। बहुत कम ग्रामवासी समाचारपत्रो पढते है इससे पता है कि भारतीय पत्रकारिता बहुत आगे नहीं।

Page No. 49
Date / /

लेकिन यथार्थवादी होना अच्छा है आज तक तक पत्रकार बनने की न सोचे की जब तक आपका ह्रदय मे लगन न हो और यह विश्वास न हो कि किसी अन्य व्यवसाय से अच्छे ये ही है। कुछ लोग यह कुछ अरसे दिन के लिए ही करते है और इसे छोड़कर कही दूसरे व्यवसाय मे जाने लगते है

यदि आप अपने लिए पत्रकारिता का चुनाव कर ही लेते है तो फिर आपका जीवन सदा सरस बना रहेगा। आप काम के और छुट्टी के दिन मे कोई फर्क नही पायेगे। आपसे कुछ अलग-२ तरह के आदमी से मिलने का मौका, यात्राओं का अवसर, प्रत्येक कुछ अलग लेखक का कार्य करना होगा लोकतांत्रिक देशों मे सरकारी सहित हर को जानने का अधिकार होता है कि देश मे क्या हो रहा है। लोगो को समाचारपत्रों को पढ़ना, दूरदर्शन के पर्दे पर देखना और आकाशवाणी से प्रकाशित होने वाली खबरो के बारे मे ~~सुनना~~ सुनना चाहिए।

जनसंचार माध्यम मे इसका विशेष महत्व है भले ही इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दूरदर्शन, रेडियो की पहुँच लगभग हर जगह हो गई है। लेकिन इससे समाचारपत्रों का महत्व यथावत कायम है टेलीविजन और

Page No. 50 Date / /

के रेडियो के कारण अखबारो मे व्यापक परिवर्तन आया है। अब अखबारो मे विचारो, मतो और पाठको के विशेष वर्गों के लिए अधिक जानकारी और खबरें होती है
इसलिए, पत्रकारो की जिम्मेदारी बहुत होती है। उसे विवेकशील, साहसिक और निष्पक्ष होने की अपेक्षा की जाती है।

Page No.
Date / /

प्रश्न - 2 संपादक के कौन - कौन से गुण होते हैं? इनका क्या उत्तरदायित्व होता है।

उत्तर किसी भी समाचार पत्र या पत्रिका के प्रकाशन में संपादक का महत्व होता है। संपादक के दिशा निर्देशन के अनुसार ही समाचार - पत्र या पत्रिका का प्रकाशन होता है। संपादक के लेख व उसकी विचारधारा के प्रभाव समाचार पत्र या पत्रिका पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। संपादक की कार्य कुशलता पर समाचार पत्र या पत्रिका आदि की सफलता निर्भर करती है। कुशल संपादक के निम्न गुण होने चाहिए। —

1. विस्तृत एवं तटस्थ दृष्टिकोण →

सबसे पहले संपादक को तटस्थ होना चाहिए। संपादक यदि किसी पक्षपात रहित विशेष विचारधारा का पक्षधर होता है या पक्ष लेता है विचारधारा का पक्षधर होता है तो वह विभिन्न विचारधाराओं विषयों के साथ न्याय नहीं कर सकता है वह तटस्थ रहकर ही समाचार पत्र के स्वामियों और अन्य लोगों के विचारों के साथ तालमेल तभी स्थापित कर सकेगा जब वह पक्षपात रहित होगा।

2. तकनीकी ज्ञान →

एक संपादक के लिए प्रकाशन संबंधित सभी तकनीकी का ज्ञान होना चाहिए आज के युग में समाचार पत्रों के प्रकाशन की नयी - नयी तकनीकी प्रभावित कर रही हैं जिनके सही प्रयोग से

समाचार पत्रों का प्रकाशन आकर्षक बन गया है तथा सस्ता भी उपलब्ध होता है. तथा कुशल संपादक के लिए सभी तकनीकों का ज्ञान होना जरूरी है।

3. नेतृत्व क्षमता एवं योग्यता →

संपादक अपने समाचार-पत्र का मुखिया होता है। उसके साथ उप-संपादक, सह-संपादक, संवाददाता, टेकनीशियन व समाचार-पत्र से संबंधित बहुत कर्मचारी कार्य करते हैं उन सबको लेकर साथ चलना और उन से काम करवाना संपादक का उत्तरदायित्व है। वह इस काम को तभी कर सकेगा, जब उसमें नेतृत्व करने की क्षमता व योग्यता होगी।

4. भाषा का ज्ञान →

संपादक जिस समाचार-पत्र का सम्पादन करता है, उसको उस समाचार पत्र की भाषा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। तभी वह संपादक लेखों को प्रभाव-शाली ढंग से लिख सकेगा और उप-संपादकों और सह संपादकों के द्वारा लिखी गई खबर को अच्छी प्रकार से जांच करेगा। सरल से सरल भावों को या विचारों को शुद्ध तथा प्रभाव-शाली भाषा में लिखा जाए तो वह जल्द ही पाठक को अपनी ओर खींचने में सफल होगा।

5. धैर्यशीलता →

कुछ स्थान ऐसे रहते हैं जहां धैर्यशीलता का होना आवश्यक है। अधीन व्यक्ति कभी भी सही निर्णय नहीं ले सकता जबकि समाचार पत्र तो समाज का मुख समझा जाता है इसीलिए बिना सोचे-समझे और जल्दबाजी में लिखने से उस समाचार पत्र की छवि तो धूमिल होगी और समाज में भी गलत संदेश जाएगा। तभी वह समाचार पत्र की नीतियों को सही ढंग से निर्धारित कर सकेगा।

6. विचार प्रकट करने की योग्यता ⇒

एक संपादक में इतनी योग्यता होनी चाहिए कि वह समाचार की नीतिमय विचारधारा को मजबूती के साथ प्रकट कर सके और जो संपादक समाचार पत्र की नीति व विचारधारा को मजबूती के साथ व क्षमता के साथ प्रकट करता है वही एक कुशल संपादक होता है।

7. विनोद-प्रियता ⇒

संपादक के कार्य को हमने बहुत गंभीर कार्य बताया है। एक संपादक को गंभीर से गंभीर समस्या व घटनाओं का विश्लेषण करने के साथ-2 वह कवि शिष्ट, हास्य, प्रवृत्ति के द्वारा पाठकों का मनोरंजन करता है, अतः संपादक को गंभीरता के साथ-साथ हास्य व्यंग्य के गुण भी होने चाहिए।

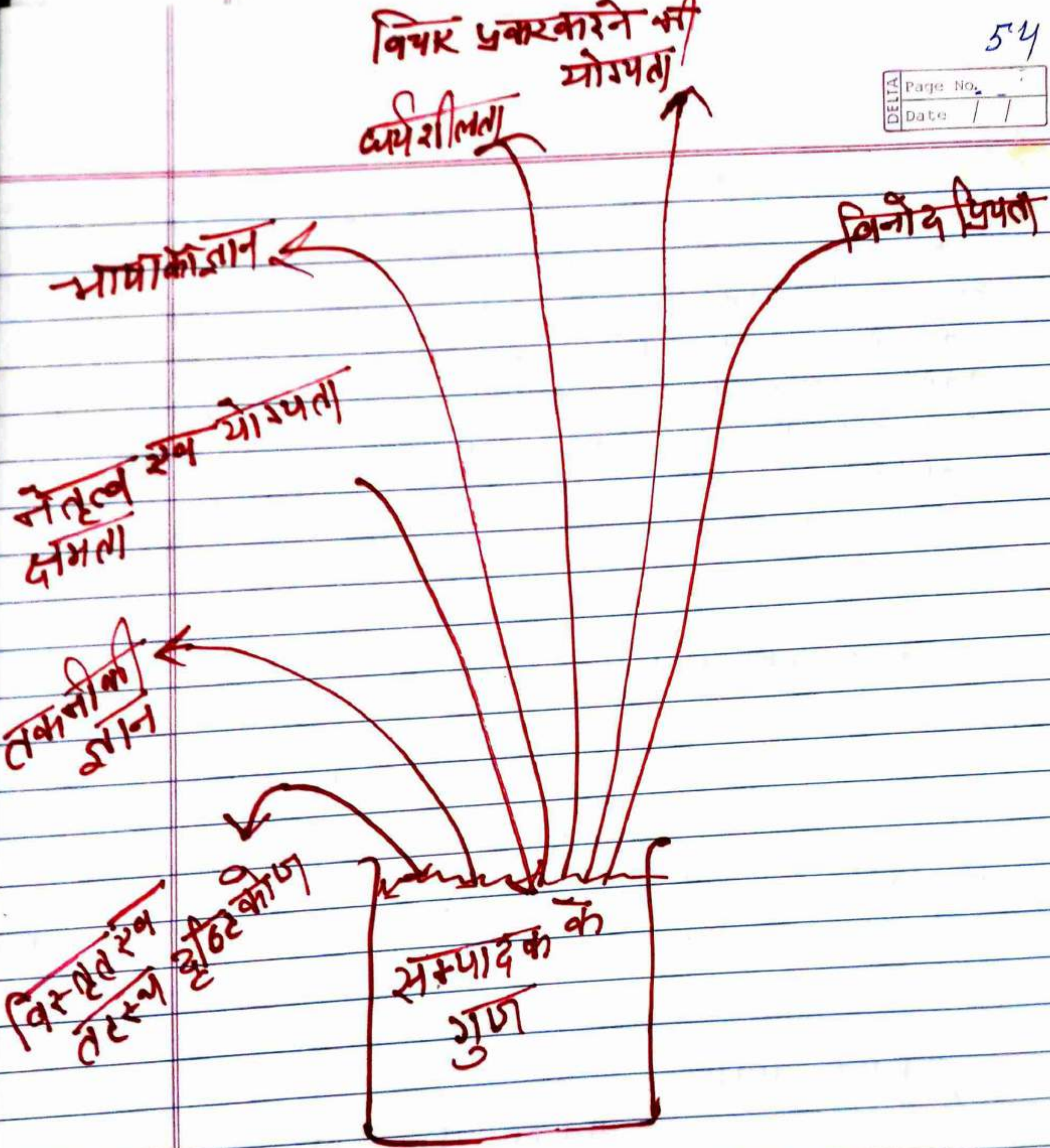
विचार प्रकट करने की योग्यता
कार्यशीलता
विनोद प्रियता
भाषा का ज्ञान
नेतृत्व एवं योग्यता क्षमता
तकनीकी ज्ञान
विश्लेषण एवं तटस्थ दृष्टिकोण
सम्पादक के गुण

Q-3 → फ़ीचर किसे कहते है उसके उद्देश्यो पर प्रकाश डालो
उ० फीचर एक गद्यात्मक रचना है। यह समाचार पत्र और पत्रिका मे प्रकाशित होती है यह रचना नए तथ्यो की खोज के साथ-साथ भावना और कल्पना पर भी लिखी जाती है। इसके उद्देश्य अग्रलिखित है,

1. जन सामान्य को नवीन तथ्यो की जानकारी ⇒

यह फीचर समाचार पत्र की भांति घटना और तथ्यों पर आधारित होती है। इसमे नवीन तथ्यो को सहज और सरल रुप देकर मनोरंजक बनाया जाता है। फीचर लेखन मे रहस्य से पर्दा हटाया जाता है। दूसरे शब्दो मे हम कह सकते है कि घटना के घटित होने के कारणो की जानकारी मिलती है, उन तथ्यो को समाचार की मदद से जनता तक पहुचाया जाता है

2. घटना तथ्यो की विस्तार से जानकारी ⇒

समाचार प्रति-दिन नए तथ्यो को प्रकट करते रहते है। किंतु फीचर लेखन मे तथ्यो के साथ-साथ सत्य को भी प्रकट किया जाता है समाचार पत्र के अंदर केवल किसी व्यक्ति द्वारा की गई आत्महत्या का समाचार प्रकाशित किया जाता है उसमे केवल इतनी जानकारी मिलती है कि अमुक व्यक्ति ने आत्महत्या कर ली है, किंतु फ़ीचर के अंदर उन सब परिस्थिति को दर्शाया जाता है जिसमे उस ने आत्महत्या की है।

Page No.
Date / /

3. मनोरंजन =>

फीचर लेखन का ~~[crossed out]~~ अन्य प्रमुख उद्देश्य पाठको का मनोरंजन करना भी है लोग अपनी रुचि व इच्छा के अनुसार समाचार पढ़ते है। युवा वर्ग खेल व फिल्मी समाचार पढ़ते है इसीलिए देश के अंदर समाज के विभिन्न वर्गो के लोग अपनी आदत व रुचि के अनुसार समाचार पढ़ते है फीचर के पढ़ने से पहले जहां पाठको के ज्ञान मे वृद्धि होती है वहा उनका मनोरंजन भी होता है अतः फीचर को पढ कर सभी वर्गो के लोग खुशी व उर्जा प्राप्त करते है।

Q→ स्वतंत्र प्रेस या प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रकाश डालो ?

उ० भारतीय संविधान के अंदर लोकतंत्र का भवन
के विधान पालिका तथा न्यायपालिका इन तीनों स्तंभों पर टिका हुआ है पहले समाचारों का इतना महत्व नहीं था किंतु आज के युग मे इनका बहुत ज्यादा महत्व है, इसे लोकतंत्र के भवन का चौथा स्तंभ बताया गया है भारतीय संविधान मे नागरिकों को मौलिक अधिकारों के द्वारा बोलने व अपने विचारों को प्रकट करने का अधिकार दिया गया है, हमे अपने विचारों को प्रेस के द्वारा ही प्रकट कर सकते है,

1 आजादी से पहले प्रेस की स्वतंत्रता की स्थिति ⇒

भारत वर्ष मे स्वतंत्र प्रेस की स्वतंत्रता का कानून या नियम सब से पहले सन् 1797 मे लागु किया गया। और इसी के साथ ही अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध बोलने या टिप्पणी करने के लिए एक कानून 1797 मे पास किया गया। लार्ड मिंटो ने सन् 1813 मे प्रेस को नियंत्रण करने के लिए कुछ कड़े नियम बनाए। परन्तु लार्ड हेस्टिंग्स ने प्रेस के महत्व समझते हुए नरम रवैया अपनाया 19 अगस्त 1818 को समाचार पत्रों को दी गई ढील 1835 तक चली। अतः समाचार पत्रों पर अनेक बार प्रतिबंध लगते रहे।

२. आजादी के बाद प्रैस की अवधारणा =)

आजादी के पश्चात भारतीय संविधान मे आजादी के पश्चात बोलने का अधिकार दे दिया गया। जिसका वर्णन संविधान के १७ वे खंड मे है। इसे वाक् स्वतंत्रता भी कहते है। बोलने की स्वतंत्रता का अधिकार अत्यंत महत्वपूर्ण अधिकार है और प्रैस की स्वतंत्रता का अमूल आधार है। लोकतंत्र की व्यवस्था मे स्वतंत्रता का होना केवल उचित ही नही अपितु आवश्यक है प्रैस की स्वतंत्रता से जुडा हुआ है। आधुनिक युग मे समाचार पत्र अपने विचार प्रकट करने का सशक्त माध्यम है प्रैस को कुछ अधिकार इस प्रकार दिए गए है:-

1. समाचार पत्रो और विचारो को तथा छपी हुई सामग्री को लोगो मे वितृत कर सके।
२. सार्वजनिक मामलो पर खुली बहस करना तथा सरकार व सरकारी कार्यो की समीक्षा कर सकते है और आलोचना कर सकते है
३. सरकार के नियंत्रण से मुक्त रहकर विभिन्न व विरोधी सूत्रो तथा स्पर्धा के आधार पर तथ्य व सूचनाए इकट्ठी कर सकते है।
४. सरकारी नियंत्रण व प्रभाव से मुक्त होकर अपनी योजनाओ के अनुसार कार्य कर सकते है.
५. वैचारिक नीति का निर्धारण स्वयं करे
६. सरकारी तथा गैर-सरकारी विज्ञापनो के प्रति अंतिम निर्णय करना

प्र० हिंदी निबंध के विकास में बाल मुकुंद गुप्त का स्थान निर्धारित करो।

उ० हिंदी निबंध का विकास भारतेन्दु युग से ही माना जाता है। इस युग की बदलती हुई स्थिति आदि के प्रभाव से तत्कालीन निबंध का जन्म हुआ। वैसे इस युग की रचनाओं को निबंध न कहकर लेख कहा जाता है, हिंदी निबंध के विकास की धारा के चार युगों में बांटा जा सकता है।

(i) भारतेन्दु युग (1857-1900)
(ii) द्विवेदी युग (1900-1920)
(iii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल युग (1920-1940)
(iv) शुक्लोत्तर युग (1940 से अब तक)

(i) भारतेंदु युग =) इस युग के निबंधकारों की दृष्टि पूरे समाज पर थी। इन्होंने समाज हित को दृष्टि में रखकर राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक सांस्कृतिक व साहित्यिक धारणाओं को लक्ष्य मानकर निबंधों के माध्यम से प्रकट किया है,

(ii) द्विवेदी युग =) द्विवेदी युग के निबंधकारों ने कला साधना की बजाय भाषा परिस्कार पर अधिक बल दिया, पाश्चात्य साहित्यकार बेकन भी निबंध शैली के लिए द्विवेदी जी को आदर्श थे। द्विवेदी जी ने अन्य साहित्यकार मौलिक निबंध लिखे। इस युग के प्रमुख प्रमुख निबंधकार सरदार पूर्णसिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी आदि हैं।

Page No.
Date / /

(III) शुक्ल युग =)

शुक्ल युग निबंध साहित्य के विकास का तीसरा चरण है। शुक्ल युग को हिंदी निबंध का स्वर्ण युग कहा जाता है। शुक्ल जी ने 'चिंतामणि' निबंध संग्रह की रचना कर के विचार अनुभूति और अभिव्यक्ति जैसे नवीन प्रतिमान साहित्य जगत के सामने रखे। शुक्ल जी के निबंधों मे साहित्य और विश्लेषण मे गहराई मिलती है। शुक्ल के निबंधकार बाबु गुलाब राय, श्री राम शर्मा, डा० रघुवीर सहाय आदि है।

(IV) शुक्लोत्तर युग =)

शुक्लोतर युग हिंदी निबंध साहित्य का उत्कर्ष काल माना जाता है। इस युग मे सभी शैलीयो के निबंध विकासित हुए। इस युग के प्रमुख निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नंद दुलारे वाजपेयी, वासुदेव शरण अग्रवाल, डा० नगेंद्र, रामवृक्ष बेनीपुरी, विद्या निवास मिश्र, हरिशंकर परसाई आदि है।

उपर्युक्त विवेचन आधार पर कहा जा सकता है कि भारतेन्दु युग से लेकर वर्तमान युग तक हिंदी निबंध लगातार विकास के पथ पर बढता जा रहा।

Page No.
Date / /

Q→ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबंध कला पर प्रकाश डाली

उ० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक प्रतिभाशाली निबंधकार थे। शुक्ल जी के निबन्धों मे बुद्धि और ह्रदय का तालमेल मिलता है। उनके निबन्धों का विषय और आधार लोक-जीवन या लोक भूमि है, उनके निबंधो का केंद्र सदा मानव जीवन रहा है। उन्होंने अपने निबन्धो मे मनुष्यो की स्वाभाविक वृत्तियों की छानबीन है, उनकी निबंध कला की निम्नलिखित विशेषताए है -

1 सुसंगठित बिचार प्रवाह =)

शुक्ल जी के निबन्धो मे विषय और बिचार दोनो ही कसावट मिलती है। भाव और बिचारो की एक लडी सी बन जाती है, और पाठक सरलता के साथ इन निबन्धो मे खो जाता है, शुक्ल जी के निबन्धों मे इतनी प्रौढ़ता पाई जाती है कि वाक्य को इधर-उधर करना सम्भव नही है

2. विषय व व्यक्ति की प्रधानता =)

शुक्ल जी की निबंध कला की दूसरी विशेषता यह है, कि उनके निबंध विषय प्रधान के साथ-2 व्यक्ति प्रधान भी है। भले ही निबंधकार की दृष्टि विषय के मूल विषय पर ही, फिर भी उसकी शैली प्रभाव छोड़ती है, और लेखक का व्यक्तित्व होती है। शुक्ल जी के निबंध विषय प्रधान के साथ-साथ व्यक्ति प्रधान भी मिलते है।

3. भावात्मकता => शुक्ल जी का हृदय सदैव भावुकता से परिपूर्ण रहा है, इसीलिए उनके निबंधों में भावों की अधिकता मिलती है। वे प्रकृति के महान प्रेमी और प्रशंसक थे। इनके निबंधों में बुद्धि तत्व के साथ-साथ हृदय तत्व का मिश्रण मिलता है

4. कुशल विषय प्रतिपादन => शुक्ल जी के निबंधों में विषय बहुत महत्वपूर्ण होता था। और वे विषय का चुनाव सुंदर ढंग से करते थे। और विषय के कथन में कहीं भी अस्पष्टता नहीं आने देते थे। वे अपनी बात को कम-से-कम शब्दों में कहने की क्षमता रखते थे।

5. आत्मानुभूति तत्व => वे अपनी बुद्धि पर हृदय को हावी नहीं होने देते थे। जो प्रसंग जहाँ होना चाहिए था, उसको उसी स्थान पर कुशलता एवं कलात्मकता के साथ बिठाते थे इस प्रकार की शैली अंग्रेजी निबंधों में नहीं पाई जाती है

6. हास्य व्यंग्य और विनोद => गंभीर निबंधकार होते हुए भी उनके निबंधों में विनोद प्रियता मुख्य रूप से मिलती थी। उनके निबंधों में हास्य

व्यंग्य और विनोद का पुटवीर हमारे सामने उभरकर आता है। उत्साह शीर्षक वाले निबंध मे इन्होने वीरता का वर्णन करते हुए वीरो पर व्यंग्य किया है

7. निबंधो पर लोकतत्व या लोकवाद =)

शुक्ल के निबंधो मे लोकतत्व तथा लोकवाद का भी विशेषता मिलती है शुक्ल जी जागरूक साहित्यकार होने के साथ-२ उस समाज से भी जुड़े हुए व्यक्ति रहे है। इसलिए उन्होने किसी भी वस्तु को समाज व लोक जीवन से अलग करके नही देखा है, और उन्होने अपने निबंधो मे समाज का ध्यान रखा है। और उन्होने अपने निबंधो मे समाज के घातक व्यक्तियो पर तीखे व्यंग्य किये है।

8. निगमन शैली का सफल प्रयोग =)

निगमन शैली का अर्थ है कि पहले बात को सूत्र मे कहना और बाद मे विस्तार से वर्णन करना। शुक्ल जी की यही शैली थी, उनके निबंध उत्साह के आरंभ मे लिखा है- दुख के वर्ग जो स्थान भय का है उनके द्वारा सूत्र का कथन पाठक के दिमाग पर सीधा प्रभाव डालता है

9. अनेक प्रकार के प्रसंगो व कथाओ का समावेश =)

शुक्ल जी ने अपने निबंधो मे किसी पौराणिक, ऐतिहासिक, लोक प्रसिद्ध अथवा स्वयं के द्वारा अनुभव की गई है शुक्ल जी ने नये-नये प्रयोग करके हिंदी निबंध साहित्य को समृद्ध कर दिया है,

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध कला की विशेषताओं पर प्रकाश डालो ?

उ० ⇒ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का 'देवदारु' निबंध उल्लेखनीय है। इस निबंध के माध्यम से 'देवदारु' वृक्ष की विशेषताओं का वर्णन किया गया है। लेखक के अनुसार यह वृक्ष पर्वतीय पर्यावरण का महान संरक्षक है। इसलिए इसे देववृक्ष कहते हैं, देवदारु वृक्ष का अस्तित्व महाभारत से भी प्राचीन है।

1 अनुभूति की अभिव्यक्ति ⇒ इस निबंध के अंदर लेखक की अनुभूति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है जहां बैठकर लिख रहा है वहां से ऊपर और नीचे पर्वत पर देवदारु वृक्षों की सीढ़ी सी नजर आ रही है और ऐसा लगता है कि किसी को यहां से गिरा दिया जाए तो हड्डी-पसली चूर हो जाएगी।

2 भावतत्व की प्रधानता ⇒ द्विवेदी जी ने प्राय जो निबंध लिखे हैं उसमें विचारों की कम और भावों की अधिक गंभीरता नजर आती है लेखक ने पर्वतीय वातावरण से प्रभावित होकर देवदारु निबंध लिखा है।

3. विषय की मौलिकता ⇒ द्विवेदी जी के निबंधों में विषय की मौलिकता मिलती है। देवदारु एक ऐसा पर्वतीय वृक्ष है। जिसके बारे में शायद ही किसी

विचार व्यक्त किया है। देवदारु का नाम और पहचान महाभारत काल से भी पहले की है। देवदारु वृक्ष के पर्वतों पर ही पैदा होने के कारण इसे सिद्धांतवादी वृक्ष कहा गया है।

4. प्रकृति-चित्रण =)

मानव ने प्रकृति की गोद में जन्म लिया है इसीलिए उसने प्रकृति का सहारा लिया है। आज भले ही लोग वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं किंतु प्रकृति से दूर हो रहे हैं। लेकिन मानव जीवन में प्रकृति बहुत महत्व है अतः द्विवेदी जी ने प्रकृति के सभी रूपों को अपने निबंधों में जगह दी है।

5. रोचकता =)

रोचकता के अभाव में निबंध अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो सकता है। क्योंकि रोचकता निबंध का प्राण तत्व है। लेखक ने निबंध में रोचकता लाने के लिए अपने जीवन के अनुभवों, पूर्व कवियों और कर्मठ व्यक्तियों के उदाहरण के साथ निबंध को संजोया है जिससे निबंध में रोचकता बनती है।

6. व्यंग्यात्मकता =)

द्विवेदी जी ने कुछ निबंधों में भाषा की गम्भीरता के साथ व्यंग्य का भी प्रयोग किया है जिन्हें पाठक पढ़ते-2 समय मंद हंसता है। अत: उनके निबंध में व्यंग्य शैली के दर्शन होते हैं।

Page No.
Date / /

7. भाषा शैली :)

द्विवेदी जी ने अपने निबंधो मे भाषा की गंभीरता के साथ भावो मे भी गंभीरता मिलती है। संस्कृत के विद्यमान होने के कारण अपने निबंधो मे शुद्ध साहित्यिक हिंदी भाषा का प्रयोग किया है। इनकी भाषा सर्वत्र वाच्नीय भावो को व्यक्त करने मे समर्थ दिखाई पडती है,

Page No.
Date / /

Q → हिंदी निबंध साहित्य के विकास मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का स्थान निर्धारित करो ?

उ० हिंदी साहित्य निबंध मे ललित निबंध कला का विकास धीरे-धीरे हुआ है। ललित निबंधो मे कल्पनाशीलता और भावो के साथ ज्ञान भी मिलता है। ललित निबंध कारो मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि के अतिरिक्त श्री विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय रामधारी सिंह दिनकर, धर्मवीर भारती और ठाकुर प्रसाद सिंह के नाम गिनाये जा सकते है। इनमे विद्यानिवास मिश्र तथा कुबेरनाथ राय केवल ललित निबंधो के कारण ही हिंदी साहित्य मे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुके है। श्री विद्यानिवास मिश्र के निबंध संग्रहो मे 'चितवन की छाव' तुम चंदन हम पानी तथा आंगन की पंछी और बंजारा मन उल्लेखनीय ललित निबंध संग्रह है,

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी शुक्लो-त्तर युग के उल्लेखनीय निबंधकार है, अशोक के फूल' कल्पलता, विचार-वितर्क, आलोकपर्व, विचार-प्रभाव तथा कुटज आदि है। उनकी साहित्य विशेषता के कारण द्विवेदी जी ललित निबंधकारो मे अग्रिम स्थान है उनके निबंधो की आधार भूमि सास्कृतिक है। यही कारण है कि उन्होने अपने निबंधो मे सास्कृतिक परंपरो का गंभीरता से वर्णन किया है।

द्विवेदी जी के ललित निबंधो मे आत्मीय भाव भी मिलते है, द्विवेदी जी के देवदारु निबंध की अधिक चर्चा न की जाए

तो भी उनके अन्य निबंधो मे ललित निबंध के गुण मिलते है। जैसे अशोक के फूल, कल्पलता, आलोकपर्व कुटज, मध्यकालीन धर्म-साधना आदि निबंधो मे ललित निबंधो की विशेषताए देखी जा सकती है द्विवेदी के निबंधो मे भाषा व शैली दोनो विषय के अनुरूप है। आधुनिक जीवन शैली के फैशन व विकृतियो के चित्रण मे तीखी व हास्य व्यंग्यात्मक भाषा का सफल प्रयोग करते है यही इनके निबंधो की विशेषता है। अपनी इन्ही विशेषताओ के कारण निबंधकारो मे प्रमुख स्थान है। वे एक उच्च कोटि के निबंधकार थे।

चो

Q→ हिंदी ललित निबंध के विकास मे विद्यानिवास मिश्र का स्थान निर्धारित कीजिए।

उ०→ हिंदी मे ललित निबंध लेखन का कार्य भारतेन्दु युग से ही हो गया था। उस युग के निबंधकारो ने सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक व राजनितिक समस्या पर भावपूर्ण ललित निबंध लिखे हैं। द्विवेदी युग मे निबंधकी भाषा मे सुधार का कार्य आरम्भ हो चुका था। गंभीर चिंतन पर इससे पहले भी निबंध लिखे गए थे, किंतु इस युग मे भावात्मक निबंध लेखन का विकास हुआ। यह युग ललित निबंधो के कारण का काल था। आगे चलकर शुक्ल युग मे हिंदी निबंधो मे जहा गंभीर विषयो का आकलन हुआ वही भावो और मनोविकारो के निबंधकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बाबु गुलाब राय, माखनलाल चतुर्वेदी परशुराम चतुर्वेदी राहुल सांस्कृत्यान आदि हैं। इस युग के निबंधो मे साहित्य, मनोविज्ञान, संस्कृति इतिहास, दर्शन से संबधित भी निबंध लिखे गए और इसके साथ-२ भावात्मक और ललित निबंधो की रचना लगातार होती रही।

शुक्लोत्तर युग मे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने ललित निबंध कला को केवल विकसित करने का प्रयास ही नही किया अपितु उसे विकसित रूप भी प्रदान किया।

डा० मिश्र ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान राष्ट्रीय चेतना के चरित्र के साथ-साथ राष्ट्रीयता के पतन,

लिए उत्तरदायी परिस्थितियों का विवेचन करते हुए अत्यंत भावात्मक ललित निबंधों की रचना की डा० विद्यानिवास मिश्र ने भाषा की रचना की डा० विद्यानिवास मिश्र ने भाषा की विविध शैलियों मे ललित निबंध लिखकर शीर्ष स्थान पर पहुंचा दिया डा० मिश्र ने अपने ललित निबंधों मे भारतेन्दु परंपरा प्राचीनता एवं नवीनता इतिहास और पुराण का अच्छा समन्वय पेश किया है। इस प्रकार भाव और शैली की दृष्टि से डा० मिश्र द्वारा रचित ललित निबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Q- हरियाणवी भाषा के उद्भव और विकास के सार का उल्लेख कीजिए ?

उ० हरियाणवी शब्द हरियाणा प्रदेश के निवासियों तथा उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा के लिए प्रयोग किया जाता है। हरियाणवी भाषा को अनेक नामों से भी जाना जाता है जैसे - बांगरू, दक्षिणी हिंदी जाटू, खड़ी बोली आदि है। राजनैतिक मानचित्र पर 1966 में हरियाणा प्रदेश अस्तित्व में आया। वर्तमान मे हरियाणवी भाषा पश्चिमी हिंदी की है एक बोली है इस पश्चिमी हिंदी का विकास सौर-सेनी से माना है।

लोक भाषाओं की यह धारा शिष्ट भाषा के समांतर चलती रहती है इन भाषाओं के समांतर चलती रहती है। इन भाषाओं के विकास का आधार जनसामान्य में ज्यादा बोल चाल से होता है और ये लोक भाषाएं सुधकर ही साहित्यिक रूप में आती है भाषा के इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण देखे जा सकते है। हरियाणवी भाषा भी एक लोक भाषा है, यह भाषा अब तक हजारों वर्ष की यात्रा कर चुकी है इसका प्रचलन प्राकृतिक भाषा के शब्दों को लेकर होता रहा है इस हरियाणवी भाषा पर संस्कृत, पाली और अपभ्रंश भाषाओं का प्रभाव देखा जा सकता है, ये हरियाणवी भाषा के विकास मे सहयोग भी दिया है और उसके शब्दकोश को विकसित भी किया है ये हरियाणवी भाषा के लोकहित विभिन्न पर्वों, विवाह शादी के अवसरों पर नारियों द्वारा गाये जाते है

2. लोक-कथाओ का योगदान =>

हरियाणवी भाषा मे जो लोक कथाए लिखी गई है। वो उस भाषा के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोक-कथाओं के अंतर्गत परियों की कथाओं, साहस व पराक्रम की कथाए, कौशल पूर्ण कथाएं, व दण्ड कथाए, जादू-टोने से सबंधित कथाएं सदियों से चली आ रही है इन लोककथाओ का हरियाणवी भाषा के विकास मे महत्वपूर्ण योगदान है।

3. हरियाणवी भाषा मे भजनों का योगदान =>

हरियाणवी भाषा के विकास मे रचित विविध प्रकार के भजनो का योगदान रहा है। इसका कारण यह है कि हरियाणा के लोग धर्म मे विश्वास रखते है झज्जर जिले मे पंडित बस्तीराम को हरियाणवी भक्ति साहित्य का तुलसीदास कहा जाता है। आज विभिन्न धार्मिक अवसरों पर हरियाणवी भजनों की गूंज सुनाई देती है।

4. हरियाणवी भाषा मे सांग परपरा का योगदान =>

हरियाणवी सांग परंपरा एक मजबूत परंपरा रही है। हरियाणवी भाषा मे लिखित सांगो का इसके विकास मे महत्वपूर्ण योगदान योगदान रहा है। हरियाणा मे सांग परंपरा का आरंभ 13वी शताब्दी से माना जाता है।

प्र०- हिंदी विकास में आचार्य रामचंद्र का स्थान निर्धारित कीजिए।

उ०- हिंदी का नव-विकसित गद्य विधाओं का निबंध का स्थान सर्वोपरि है। जहां संस्कृत के अंदर गद्य को कवियों की कसौटी कहा गया है। हिंदी निबंध साहित्य में आचार्य शुक्ल का स्थान निर्धारित करने के लिए निबंध साहित्य के इतिहास पर नजर डालते हुए इसके विकास को निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत रखा जा सकता है।

भारतेंदु 2) द्विवेदी-युग 3) शुक्ल युग
4) स्वतंत्रता के बाद का युग

द्विवेदी युग - द्विवेदी युग में आकर भाषा और विषय दोनों का सुधार हुआ। किंतु निबंध साहित्य की वास्तविक उन्नति शुक्ल जी के निबंधों से हुई। आचार्य शुक्ल जी का स्थान निर्धारित करने का प्रयास करेंगे।

शुक्ल-युग - शुक्ल जी के पहले निबंधों में राष्ट्रीय भावना का स्वर ही अधिक सुनाई पड़ता है। शुक्ल द्वारा रचित निबंधों साहित्य के और मनोविकारों पर हिंदी निबंध लिए निबंधों में शुक्ल जी जैसा सूक्ष्म धरातल की नजर में आता है। शुक्ल जी के निबंधों जैसा सूक्ष्म विश्लेषण अंग्रेजी के निबंधों

Page No.
Date / /

में भी नहीं मिलता। हिंदी निबंध साहित्य निबंधों का लेखन शुक्ल जी से पहले ही आरंभ हो चुका था। लेकिन द्विवेदी युग में ऐसे निबंधों का निर्माण प्रचुर मात्रा में हुआ है और द्विवेदी जी ने कविता जैसे निबंध लिखे। आचार्य शुक्ल जी के निबंध शुक्ल साहित्य को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि उनका स्थान पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों ही प्रकार के निबंधकारों में प्रमुख है। शुक्ल जी ने पूर्ववर्ती निबंधकारों की परंपराओं को आगे बढ़ाते हुए निबंधों के माध्यम से एक स्वस्थ आदर्श स्थापित किया। वहीं भविष्य के लेखकों को एक सच्चा रास्ता भी दिखाया। आज बड़े से भी बड़ा निबंधकार के सामने श्रद्धा से सिर झुकाता है। अतः हम कह सकते हैं कि शुक्ल जी का हिंदी निबंध साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है।

Seen